इकाई 39: माखनलाल चतुर्वेदी

इकाई की रूपरेखा

39.0 उद्देश्य

39.1 स्वतंत्रता-पूर्व हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि

39.2 माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय

39.3 पत्रकारिता और माखनलाल चतुर्वेदी

39.4 माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का भाव पक्ष

39.5 माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का रचना-शिल्प

39.6 माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का मूल्यांकन

39.7 काव्य-वाचन (पाठ)

39.8 संदर्भ सहित व्याख्या

39.9 सारांश

39.10 उपयोगी पुस्तकें

39.11 बोध प्रश्न/अभ्यासों के उत्तर

39.0 उद्देश्य

कवि के युग की प्रवृत्तियाँ बता सकेंगे।

- कवि के व्यक्तित्त्व और कृत्तिव का वर्णन कर सकेंगे।
- कवि के राष्ट्रीय स्वर का विवेचन कर सकेंगे।
- तीनों कविताओं "कैदी और कोकिला", "पुष्प की अभिलाषा" तथा "सिपाही"
- शीर्षक कविता का रसास्वादन कर सकेंगे।
- राष्ट्रीय नवजागरण में पत्रकारिता के माध्यम से कवि के योगदान का परिचय दे सकेंगे।
- कवि के काव्य का अपने शब्दों में मूल्यांकन कर सकेंगे।

39.1 स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी कविता में राष्ट्रीय-चेतना की पृष्ठभूमि

हिन्दी कविता की समस्त काव्य-धाराओं में राष्ट्रीय काव्यधारा का विशेष महत्व है। राष्ट्रीय कविताओं द्वारा राष्ट्र के भिन्न-भिन्न वर्गों, सम्प्रदायों और प्रान्तों में भावात्मक एकता के विचार पुष्ट होते हैं। राष्ट्रीय कविताएँ जाति, समाज और प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना मिटाती हैं, जन-सामान्य के हृदय में कर्त्तव्य की भावना जगाती हैं। इन्हीं कविताओं से प्रेरणा पाकर अनेक वीरों ने हँसते-हँसते अपने को देश की आज़ादी के लिए अर्पित कर दिया। वास्तव में हिन्दी कविता ने स्वाधीनता आन्दोलन में राष्ट्र को जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

आधुनिक हिन्दी कविता के प्रथम चरण में नवजागरण का प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा। भारत में व्यापार के लिए आई हुई विदेशी जातियों ने यहाँ की राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाकर छल-बल द्वारा भारत को अपना उपनिवेश बना लिया और अंग्रेज भारतीय जनता पर नाना प्रकार के अत्याचार करने लगे। भारत के नरेशों

एवं जनता के साथ जिस प्रकार की नीति उन्होंने अपनायी उससे भारत का समस्त जन-मानस क्षुब्ध हो गया। लार्ड डलहौजी के अमानुषिक अत्याचार ने भारतीय जनता के हृदय में विद्रोह की आग सुलगा दी जो 1857 की क्रांति-ज्वाला बनकर धधक उठी। 1857 की इस क्रांति ने उग्र रूप धारण किया परन्तु अंग्रेजों ने उतनी ही क्रूरता एवं नृशंसता से इसका दमन किया। इस प्रकार 1857 की यह क्रांति असफल ही रह गई।

राष्ट्रीयता की भावना चूंकि विखंडित अवस्था में थी अतः प्रथम स्वाधीनता संग्राम असफल रहा। राजनीतिक आन्दोलनों में जैसे-जैसे तीव्रता आती गई वैसे-वैसे राष्ट्रीय चेतना प्रखर होती गई। परिणामस्वरूप समूचे देश ने अंग्रेजी सत्ता से मुक्त होने के लिए अपनी प्रान्तीय संकीर्णता को त्यागकर एकता और संगठन के महत्व को समझा।

अंग्रेज भारत में अपनी राजनीतिक जड़ें गहराई तक रखना चाहते थे। अतः यहाँ की सांस्कृतिक चेतना समाप्त करने के लिए उन्होंने कदम उठाया। क्योंकि वे जानते थे कि किसी भी देश की जनता को गुलाम बनाए रखने के लिए वहाँ की सांस्कृतिक चेतना को समाप्त करना आवश्यक है। अंग्रेज यहाँ की शिक्षा-नीति में परिवर्तन करने लगे। संपूर्ण देश में अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति चालू हो गई। ईसाई मिशनरियाँ अपने धर्म का प्रचार करने लगीं। धर्म-प्रचार के लिए इन्होंने अपनी धर्म-पुस्तकें यहाँ की भाषाओं में छपवाकर बिना मूल्य के वितरित कीं। यहाँ के लोगों के सामाजिक-धार्मिक विधानों में भी हस्तक्षेप करना आरम्भ किया और जो गलत रूढ़ियाँ समाज में व्याप्त थीं उनका विरोध किया। फलतः भारतीय समाज पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होने लगा। भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति के इस संघर्ष को दूर करने के लिए सांस्कृतिक आन्दोलन चलाए गए। इन आन्दोलनों को चलाने में राजाराम मोहन राय, राम-कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, अरविन्द रमण महर्षि के नाम उल्लेखनीय हैं।

राजा राममोहनराय ने ब्रहम समाज की स्थापना की। इसका मुख्य उद्‌देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से मिटाना था। इन्होंने विधवा-विवाह-निषेध, सती प्रथा तथा अन्य कुरीतियों का विरोध किया और स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह आदि का समर्थन किया। भारतीय जन-जीवन में आरंभिक जागरण की दृष्टि से इस संस्था का बड़ा महत्व रहा। आरंभ में कवीन्द्र रवीन्द्र ने भी इस संस्था को समर्थन दिया। धर्म और समाज के क्षेत्र में इस संस्था ने जागरण लाने का प्रयत्न किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। इन्होंने ईसाई धर्म के विरुद्ध आन्दोलन चलाया। लोगों में स्व-धर्म सम्मान की भावना जगी। जाति-अभिमान और राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। स्वतंत्रता आन्दोलन की चेतना को बल मिला। धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बरों का विरोध किया।

रामकृष्ण परमहंस के आदर्शों को लेकर रामकृष्ण मिशन की स्थापना हुई। इस संस्था ने भी राष्ट्रीय आन्दोलनों को बल प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द ने भी इस संस्था को पूर्ण सहयोग दिया, भारतीय जन-मानस को सभी क्षेत्रों में प्रबुद्ध किया।

महाराष्ट्र के महादेव गोविन्द रानाडे ने भी धर्म एवं समाज में व्याप्त रूढ़ियों का विरोध किया, राष्ट्रीय चेतना जगाई। महाराष्ट्र की जागृति में इस संस्था का योगदान महत्वपूर्ण था।

इस दृष्टि से थियोसोफिकल सोसाइटी का महत्व भी कम नहीं है। यद्यपि इसकी स्थापना अमेरिका में हुई थी परन्तु श्रीमती एनी बेसेन्ट के इस संस्था में आने से इस संस्था को उद्‌देश्य पूर्ति में सफलता मिली। सामाजिक-चेतना, जातीय स्वाभिमान, आधुनिक चेतना, भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं दर्शन का सम्यक् अध्ययन आदि की दृष्टि से इस संस्था का महत्व है। इन्होंने ही भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के अध्ययन एवं प्रचार हेतु काशी में सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल खोला वही बाद में कालेज और फिर हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ।

इसके अतिरिक्त सनातन धर्म सभा जैसी संस्थाअें ने भी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का कार्य किया। लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत की।

इण्डियन एसोसिएशन और इण्डियन नैशनल कांग्रेस की स्थापना ने लोगों के मन में एक राजनीतिक चेतना जगाई। सन् 1876 ई. में श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कलकत्ता में इण्डियन एसोसिएशन संस्था का आरंभ किया। इन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध देश व्यापी आंदोलन चलाया। यद्यपि बहुत सफलता नहीं मिली लेकिन लोगों में राजनीतिक चेतना आई और राष्ट्रीय स्तर पर एक जुट होकर कार्य करने की भावना जगी। इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में श्री ह्यूम नामक एक अंग्रेज ने की जिसका कार्य केवल भाषण तक ही सीमित रहा परन्तु बाद में बालगंगाधर तिलक जैसे लोगों का सक्रिय योगदान इस संस्था को मिला तो इसके सिद्धांतों में परिवर्तन हुआ। सन् 1905 में जब बंगाल का विभाजन हुआ तो इस संस्था के आन्दोलन द्वारा भारतीय जन-मानस में राजनीतिक जागृति आई और बाद में महात्मा गांधी जैसे लोगों के सहयोग से इस संस्था को अपने उद्‌देश्य में सफलता मिली।

यह वह समय था जब लोगों में राजनीतिक चेतना का जन्म हुआ। देश की वास्तविक दशा का भान लोगों को होने लगा। सुधारवादी आन्दोलनों से धार्मिक एवं सामाजिक जागृति आई और कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् तो स्वदेशी आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। सारे देश में देश-भक्ति की लहर प्रवाहित हो गई।

हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना का विकास भारतेन्दु युग से ही दिखाई देता है। यह राष्ट्रीय भावना अतीत-गौरव के गान एवं देश-प्रेम के रूप में अभिव्यक्त हुई है। बीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीयता की भावना तेजी से उभरी, देशवासियों ने ब्रिटिश शासन की दुर्भावना को समझा और देश की एकता की आवश्यकता को गहराई से महसूस किया। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी का अहिंसात्मक प्रतिरोध सफल हुआ जिसने भारतवासियों को मानसिक बल प्रदान किया। देश में एक नये उत्साह की लहर दौड़ गई। इसी अवसर पर माखन लाल जी कविता के क्षेत्र में अवतरित हुए।

39.2 माखन लाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 को होशंगाबाद से 14 मील दूर "बाबई" ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री नन्दलाल चतुर्वेदी प्राइमरी स्कूल के अध्यापक थे। पं. नन्दलाल स्वयं बड़े साहसी और स्वाभिमानी व्यक्ति थे जिसका प्रभाव उनके पुत्र माखनलाल पर भी पड़ा। असमय ही इनके पिता स्वर्गवासी हो गए और बालक माखनलाल के भरण-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का भार उनकी सात्विक विचारों वाली माताजी, श्रीमती सुकर बाई पर पड़ा। "बाबई" जैसी एक छोटी सी बस्ती में बालक माखनलाल की शिक्षा-दीक्षा की कोई उचित व्यवस्था नहीं हो सकती थी इसलिए ऊँचे संस्कारों वाली जननी ने अपने बेटे के प्रति मोह को भुलाकर उन्हें उनकी बुआ के पास "सिमरनी" नामक कस्बे में भेज दिया। बालक माखनलाल ने सिमरनी में ही रहकर, लगभग दस वर्षों तक शिक्षा पाई और वहीं उन्हें काव्य-रचना की पहली अन्तः प्रेरणा प्राप्त हुई। बचपन से ही इन्हें तुकबंदियाँ करने का शौक था। अतः तुकबंदियाँ करते-करते इनकी काव्य प्रवृतियाँ पुष्ट हो चली थीं। किन्तु अपने जन्मजात संस्कारों के बल पर उन्होंने स्वाध्याय से ही अपने ज्ञान-भण्डार को समृद्ध किया। चतुर्वेदी जी ने संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया और इन सभी भाषाओं में उपलब्ध उच्च कोटि के साहित्य का अध्ययन भी कर लिया। सन् 1904 में 15 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह ग्यारसी बाई के साथ हुआ। 1905 ई. में बम्बई के निकट एक देहात "मसन" में वे अध्यापक नियुक्त हुए। देश की मिट्टी से इनका बचपन से ही अनन्य प्रेम था। यही कारण है कि मिडिल परीक्षा देने के लिए जब ये जबलपुर गए तब इनकी पहचान क्रांतिकारी युवकों से हुई। उस समय से ही ये उन्हें पिस्तौल, बम आदि छुपाने तथा ले जाने में सहायता किया करते थे।

1906 में जब कलकत्ता कांग्रेस में लोकमान्य तिलक पधारे तो माखनलाल जी भी उनकी सुरक्षा के लिए कलकत्ता गए। वहीं से लौटते समय काशी में इन्होंने क्रांतिकारी नेता देवसकर से दल की दीक्षा ली। इसके बाद इनका क्रांतिकारियों से संपर्क बढ़ा। इनके संबंधों का क्षेत्र विस्तृत हो चला था। सैयद अलीमीर, स्वामी रामतीर्थ, पं. माधवराव सप्रे तथा माणकचन्द जैन का इन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। सप्रे जी ने इनमें देश-भक्ति की भावना को दृढ़ किया तथा इनके राजनीतिक गुरू बने।

अपने सशस्त्र क्रांतिकारी आन्दोलन के समय में श्री चतुर्वेदी जी को सन् 1905 ई. से 1912 ई. तक शिक्षक का व्यवसाय अपनाना पड़ा। सन् 1907 ई. में जब वे "मसन" कस्बे से खण्डवा के स्कूल में अध्यापक होकर आए तो वे जल्दी ही खण्डवा और मध्यप्रदेश के अच्छे कवि के रूप में मशहूर हो गए। साहित्यिक और पत्रकारिता के क्षेत्र में ये इतने आगे बढ़ चुके थे कि इनके सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ—ये सरकारी नौकरी में रहें या स्वतंत्र वाणी और मुक्त जीवन को स्वीकार करें। इन्होंने दूसरे जीवन को ही पसन्द किया और 1913 में अध्यापन के व्यवसाय को सदा-सदा के लिए नमस्कार कर दिया।

जीवन, साहित्य और राजनीतिक की चिन्ता में दिन-रात व्यस्त रहने के कारण माखनलाल जी अपने परिवार की ओर समुचित ध्यान नहीं दे पाते थे। उनका दिन कार्यों की व्यस्तता में और रात को अधिकांश समय अध्ययन में बीत जाता था। इस व्यस्त जीवन का परिणाम यह हुआ कि वे अपनी जीवन संगिनी सौ. ग्यारसी-बाई की ओर भी अधिक ध्यान नहीं दे पाये। इधर ग्यारसी बाई राजयक्ष्मा का शिकार बन गई और भीतर-भीतर घुलते-घुलते एक दिन चिर निद्रा में लीन हो गई। माखनलाल जी को उनकी सही दशा का भान तब हुआ जब उन्हें बचाना मानवीय सामर्थ्य के बाहर हो गया था। माखनलाल जी को इसका कितना दुःख और पश्चाताप था कि इसका आभास उस समय लिखी कविता की पंक्ति से हो जाता है—

भाई, छेड़ो नहीं, मुझे खुलकर रोने दो,
यह पत्थर का हृदय आँसुओं से धोने दो।

सन् 1906 ई. से 1920 ई. तक श्री चतुर्वेदी जी निरन्तर क्रांतिकारी दल के लिए कार्य करते रहे। उन्होंने अनेक क्रांतिकारियों को अपनी जान का खतरा लेकर भी शरण दी। कई बार उनके घर और कार्यालय की तलाशी ली गई।

सन् 1919-20 में माखन लाल जी के जीवन में एक नया मोड़ आया। भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी का प्रवेश हो गया था। उन्होंने काशी विश्वविद्यालय में क्रांतिकारियों को निःशस्त्र आने का निमंत्रण दिया। माखनलाल जी भी वहाँ पहुँचे और गांधी जी की बातों से इतने प्रभावित हुए कि उनके अनुयायी बनकर लौटे।

माखनलाल जी का जीवन और साहित्य दोनों ही राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित था। अपने जीवन में वे राष्ट्रीय आन्दोलनों में हिस्सा लेते रहे, पहले हिंसावादी क्रांतिकारी दल में दीक्षा लेकर और बाद में गांधी जी के अहिंसात्मक सत्याग्रही बनकर। इन्होंने जहाँ कविता के माध्यम से राष्ट्रभक्ति के भाव व्यक्त किये वहीं पत्र-कारिता के माध्यम से देश की राजनीति में योग दिया। अपने पत्र और लेखों द्वारा ब्रिटिश शासन का खूब विरोध किया। इनकी विद्रोहात्मक लेखनी से ब्रिटिश शासन घबरा गया और सन् 1921, 1922 और 1927 में राजद्रोह के अभियोग में इन्हें कारागार भेजता रहा। स्वतंत्रता आन्दोलन को सक्रिय प्रेरणा देने की प्रवृत्ति उनके काव्य में ही नहीं बल्कि उनके जीवन में भी मिलती है। जेल-यात्रा उनके लिए गौरव-यात्रा थी, इसीलिए उन्होंने कहा—

> "क्या ? देख न सकती जंजीरों का गहना।
>
> हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना।"

माखनलाल चतुर्वेदी एक ओर तो गांधीवाद का अनुगमन करते थे तो दूसरी ओर क्रांतिकारियों के प्रति स्नेह भी रखते थे। बलिदानी वीरों के प्रति उनके मन में गहरी आत्मीयता थी। अतः वे जहाँ क्रांतिकारियों को सहायता पहुँचाते थे वहीं दूसरी ओर असहयोग आन्दोलन और राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय हिस्सा भी लेते थे। सरकार की इन पर कड़ी नजर थी। अपने भाषणों के क्रम में इन्होंने जबलपुर में अंग्रेजी शासल के खिलाफ आवाज़ उठाई। परिणामस्वरूप 12 मई 1930 को उन पर पुनः राजद्रोह का अभियोग लगाया गया और जबलपुर में उन्हें एक मास की सजा हुई।

राजनीतिक नेता, पत्रकार, कवि तथा गद्यकार के रूप में इन्होंने देश और साहित्य की सेवा की। इस कारण ये लोकप्रिय हुए। अनेक संस्थाओं ने इनका स्वागत किया। लोगों ने इन्हें सम्मान दिया।

1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने "हिमकिरीटनी" पर उन्हें देव पुरस्कार दिया। हरिद्वार में उनका चांदी के सिक्कों से तुलादान हुआ।

1947 में उन्हें "साहित्य वाचस्पति" उपाधि प्रदान की गयी।

1954 में "साहित्य अकादमी" की ओर से "हिमतरंगिनी" पर 5,000 रुपयों का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया।

1963 में गणतंत्र दिवस पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने व्यक्तिगत गुणों के लिए इन्हें पद्मभूषण की उपाधि प्रदान की। परन्तु जब भारतीय संसद में हिन्दी को पूर्णतः राष्ट्रभाषा बनने की अवधि में परिवर्तन करने के लिए विधेयक पारित किया गया तो उसके विरोध में इन्होंने वह सम्मान लौटा दिया।

वे आजीवन आर्थिक संघर्ष से जूझते रहे। परन्तु जीवन के अंतिम क्षण तक उनका मनोबल शिथिल नहीं हुआ। शरीर के थक जाने पर भी वे मन से चिर युवा बने रहे। अपने अन्तर्मन के उत्साह को प्रकट करते हुए उन्होंने "माता" में लिखा है—

> "कौन कहता है कि तुम वृद्धत्व मेरे पास आये।"

भावनाओं की तरूणाई चतुर्वेदी जी की सांसों की प्रथम और अंतिम शक्ति थी। वे मन से चिर युवा थे। उनका उत्साह युवकों के लिए स्पृहणीय था। जीवन के संघर्षो के बीच सब कुछ उत्सर्ग कर दिनांक 30 जनवरी 1968 को उन्होंने खण्डवा में अपने निवास स्थल पर प्राण त्याग दिये। उन्हीं के शब्दों में उनके जीवन को यदि कहना चाहें तो हम कह सकते हैं—

> सूली का पथ ही सीखा है
>
> सुविधा सदा बचाता आया।
>
> मैं बलिपथ का अंगारा हूँ
>
> जीवन ज्वाल जगाता आया।

रचनायें:

1. कृष्णार्जुन युद्ध नाटक, सिरजन और मंचन 1916, प्रकाशन (पुस्तकाकार) 1918 ई.।
2. हिमकिरीटिनी (कविता संग्रह) 1943 ई.।
3. साहित्य-देवता (निबन्ध संग्रह) 1943 ई., यद्यपि इसके अधिकांश निबन्ध 1921-22 में विलासपुर जेल में लिखे गए थे।
4. हिमतरंगिनी (कविता-संग्रह) 1949 ई.।
5. माता (कविता-संग्रह) 1951 ई.।
6. युग चरण (कविता-संग्रह) 1956 ई.।
7. समर्पण (कविता-संग्रह) 1956 ई.।
8. अमीर इरादेः गरीब इरादे (निबन्ध-संग्रह) 1960 ई.।
9. वेणु लो गूंजे धरा (कविता-संग्रह) 1960 ई.।
10. समय के पाँव (संस्मरणात्मक निबन्ध) 1962 ई.।
11. चिन्तन की लाचारी (भाषण-संग्रह) 1965 ई.।
12. बीजुरी काजल आँज रही (कविता-संग्रह) 1980 ई., (जिसमें 1955 से 64 के बीच रची रचनाएँ हैं।)
13. रंगों की बोली (निबन्ध-संग्रह) 1982 ई., (जिसमें बहुत पुराने 1944 तक के निबन्ध भी हैं।)

बोध प्रश्न-1

(i) राष्ट्रीय चेतना की कविता जन जीवन को किस रूप में प्रभावित करती है ?

(ii) वे कौन-कौन से सुधारवादी आन्दोलन थे जिसने स्वतंत्रता पूर्व की राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित किया।

बोध प्रश्न-2

(i) माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ii) उन्हें किन-किन भाषाओं का ज्ञान था ?

(iii) उनके जीवन पर किन-किन महापुरुषों का प्रभाव पड़ा ?

बोध प्रश्न-3

(i) माखनलाल चतुर्वेदी ने किन-किन पत्रों का संपादन किया ?

(ii) पत्रकारिता के क्षेत्र में वे किन-किन विभूतियों के निकट संपर्क में आये ?

(iii) वह कौन-सा पत्र था जो उन दिनों राष्ट्रीय जागरण का अग्रदूत था ?

बोध प्रश्न-4

(i) माखनलाल चतुर्वेदी किस उपनाम से विख्यात हुए ?

(ii) चतुर्वेदी जी की कविताओं के भावपक्ष को किन-किन रूपों में बाँटा जा सकता है ?

(iii) चतुर्वेदी जी की कविताओं में लोक जीवन का प्रभाव किस रूप में हैं ?

बोध प्रश्न - 5

(i) इनकी प्रमुख कविताओं के नाम बताइये जो इनकी राष्ट्रीय भावना और कवि व्यक्तित्त्व की वीरता को उजागर करती हैं।

(ii) 18 फरवरी 1922 को विलासपुर जेल में इन्होंने कौन सी प्रसिद्ध रचना लिखी थी ?

बोध प्रश्न - 6

(i) कोयल की वाणी को कवि रणभेरी क्यों कहता है ?

(ii) "पुष्प की अभिलाषा" के माध्यम से किसकी अभिलाषा व्यक्त हुई है ?

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए:—

(i) मुझे नसीब कोठरी काली

(ii) रोना भी है मुझे गुनाह

39.3 पत्रकारिता और माखनलाल चतुर्वेदी

श्री माखनलाल चतुर्वेदी निर्भीक पत्रकार भी थे। पत्रकार के रूप में उनका व्यक्तित्त्व शत-शत अवरोधों के सामने न तो झुका और न ही बिका और 1913 में जब श्री कालूराम गंगराडे ने "प्रभा" मासिक का प्रकाशन किया तो इन्होंने 30 रुपये मासिक वेतन पर सहायक संपादक के रूप में अपने आपको पूर्ण रूप से इस कार्य से जोड़ दिया। इनमें मुख्य थे—श्री माधवराव सप्रे, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महात्मा मुंशीराम तथा पंडित विष्णु दत्त शुक्ल। "प्रभा" के माध्यम से माखनलाल जी ने राष्ट्रीय और सामाजिक जागरण का कार्य संपन्न किया।

माखनलाल जी ने तन-मन से "प्रभा" की सेवा की। परन्तु अनेकानेक कठिनाइयों के कारण "प्रभा" बारह अंक प्रकाशित होने के बाद बंद हो गई। बन्द होने का विशेष कारण था कि मध्यप्रान्त में हिन्दी का कोई अच्छा प्रेस न था और "प्रभा" पूना से छपती थी। अतः अनेकानेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। एक वर्ष बाद गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रयत्नों से "प्रभा" फिर कानपुर से प्रकाशित हुई। "प्रभा" के संपादन एवं प्रकाशन में वे इतने तल्लीन हो गए कि उन्होंने घर-गृहस्थी के सुखों को त्याग दिया तथा अपनी पत्नी की आहुति भी प्रभा की पत्रकारिता के यज्ञ में चढ़ा दी। परन्तु आर्थिक संकटों के कारण एक वर्ष बाद "प्रभा" पुनः बंद हो गई। "प्रभा" की विभिन्न सम्पादकीय टिप्पणियाँ और विविध विषयों पर आपके विचार आज साहित्य की अक्षय निधि हैं।

"प्रभा" की अकाल मृत्यु माखनलाल जी के संकल्प और शक्ति को नहीं तोड़ पाई। कालान्तर में वही निष्ठा "कर्मवीर" में प्रतिफलित हुई। 17 जनवरी, 1920 को जबलपुर से साप्ताहिक "कर्मवीर" निकला। इसके प्रधान सम्पादक श्री सप्रे जी तथा सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी थे। इस समय तक (1920) चतुर्वेदी जी सशस्त्र क्रांति के विचारों की सक्रियता से विश्राम लेकर गांधी जी की राजनीति में सहयात्री हो गए थे। "कर्मवीर" नामकरण का भी अपना इतिहास है। पत्र का नामकरण एक ऐसे लोकनायक जीवित व्यक्ति के अनुरूप रखना था जो राष्ट्र के जीवन में नवीन चेतना भर रहा था। उन दिनों महात्मा गांधी जनजीवन में कर्मवीर मोहनदास कर्मचंद गांधी कहलाते थे अतः जन-जीवन में नवीन क्रांति उत्पन्न करने के पवित्र उद्देश्य से नये साप्ताहिक का नाम "कर्मवीर" रखना माखनलाल जी का ही व्यक्तिगत साहस था।

"कर्मवीर" ने देशी रियासतों के दुराचारी राजा-महाराजाओं का खूब भंडा-फोड किया। मध्यभारत के एक महाराजा ने उन्नीस हजार रुपये देकर "कर्मवीर" का मुँह बन्द करना चाहा, किन्तु चतुर्वेदी जी ने आर्थिक कठिनाइयों के होने पर भी इस धनराशि को ठुकरा दिया और "कर्मवीर" का ईमान बेचने से इन्कार कर दिया। यह पत्र बहुत समय तक देशी राज्यों की प्रजा का मुखपत्र बना रहा। एक बार तो अठारह रियासतों ने इसका प्रवेश बन्द कर दिया। परन्तु फिर भी इन्होंने बड़े साहस से स्थिति का सामना किया।

"कर्मवीर" साप्ताहिक और "प्रभा" में चतुर्वेदी जी की प्रायः वे सभी कविताएँ प्रकाशित हुई थीं, जिन्होंने तत्कालीन हिन्दी काव्य में, क्रांतिकारी एवम् राष्ट्रीय विचारधारा को एक विशिष्ट काव्य प्रवृत्ति के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। सन् 1920 ई. में वे झण्डा-सत्याग्रह में गिरफ्तार हुए और नागपुर जेल के अपने कारावास काल में, उन्होंने शहीद सत्याग्रही हरदेव नारायण सिंह की स्मृति में "झण्डे की भेंट" नामक अपनी प्रसिद्ध कविता लिखी जो "प्रभा" के झण्डा अंक में प्रकाशित हुई थी, उसकी कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

ले झण्डा, चल पड़ा, प्राण का मोह छोड़, वह तरुण युवा।
उसकी गति पर अहा। देश के अमरों को भी क्षोभ हुआ।।
सजा हुई, जंजीरें पहनीं, दुर्बल था, पर वार हुए,
मिट्टी, मोट, चक्कियाँ, कोल्हू, हँस-हँस कर स्वीकार हुए।
मातृभूमि! मैं तेरी सूरत देख, सभी सह जाऊँगा।
दे ने दण्ड, आर्यबालक, हूँ, मस्तक नहीं झुकाऊँगा।।

जेल से छूटते ही चतुर्वेदी जी पुनः "कर्मवीर" के सम्पादन में प्राणपण से जुट गए। उस समय असहयोग आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था और "कर्मवीर" के सम्पादकीय लेखों ने उसे मध्यप्रदेश में तीव्रतर बनाने में भारी योग दिया था। 12 मई, 1921 ई. की रात को पुलिस उन्हें "कर्मवीर" कार्यालय से हथकड़ी लगाकर ले गई और उन्हें कठोर कारावास का दंड मिला।

"प्रभा", "कर्मवीर" और "प्रताप" के माध्यम से उन्होंने देश की जनता में व्याप्त जड़ता को तोड़ा एवं क्रांति का संदेश दिया। इस दृष्टि से कर्मवीर मध्य प्रदेश की पत्रकारिता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। उनकी पत्रकारिता ने आत्मशौर्य एवं अपराजेय भावना को जन-जन में भरा और लेखकों, कवियों तथा पत्रकारों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार की जिनकी अभिव्यक्ति निरन्तर आग से नहाती रही। पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान ऐतिहासिक महत्व रखता है।

39.4 चतुर्वेदी जी के काव्य का भाव-पक्ष

चतुर्वेदी जी की कविताओं का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उनके हृदय में प्रेम की एक अखंड एवं अनन्त धारा प्रवाहित हो रही थी। यह प्रेम कहीं श्रृंगार-भावना के रूप में है और कहीं भगवद् भक्ति के रूप में। अतः इनकी कविताओं में व्यक्त अनुभूतियों को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं–

1) अलौकिक प्रेम या रहस्य भावना
2) भगवद् प्रेम या भक्ति-भावना
3) स्वदेश प्रेम या राष्ट्रीय भावना

अलौकिक प्रेम

चतुर्वेदी जी के काव्य में अलौकिक प्रेम को मान्यता मिली है। कवि असीम की सत्ता में विश्वास करता है। यह प्रेम तत्व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है क्योंकि वह प्रेम जगदीशमय है–

है कौन सा वह तत्व, जो सारे भुवन में व्याप्त है
ब्रह्माण्ड पूरा भी नहीं जिसके लिए पर्याप्त है
है कौन-सी वह शक्ति क्यों जी कौन सा वह भेद है
बस ध्यान ही जिसका मिटाता आपका सब शोक है
वह पेम है, वह प्रेम है, वह प्रेम है, वह प्रेम है
है अचल जिसकी मूर्ति, हाँ, हाँ अटल जिसका नेम है।।

अलौकिक प्रेम की व्यापकता का बोध कराने के लिए कवि कहता है–

यह व्याप्त है सब में अजी यह सभी का आधार है
पाठक महोदय! अधिक क्या यह स्वर्ग सुख का द्वार है
जगदीशमय है प्रेम निश्चय, प्रेममय संसार है।।

वह अव्यक्त समस्त प्रकृति में व्याप्त होते हुए भी कवि को कभी दूर प्रतीत होता है और कभी पास—

> यौवन के छल की तरह दूर, कलिका से फल की तरह दूर
>
> सीपी की खुली पंखुड़ियों से स्वाती के जल की तरह दूर।
>
> ताड़ित तंरग की तरह पास, अधकटे अंग की तरह पास
>
> उल्लास श्वास की तरह नहीं, पागल उल्लास की तरह पास।

कवि एक अव्यक्त सर्वव्यापक तत्व को ऐसे प्रियतम के रूप में मानता है कि उसे यह कहना अच्छा लगता है—

> तुम्हारे खो जाने में दुख, तुम्हारे पा जाने में आज।
>
> भूमि का मिल जाता है छोर, गगन का मिल जाता है राज।

चतुर्वेदी जी की बहुत सी रचनाएँ देशकाल से परे शाश्वत भावों को अभिव्यक्त करती हैं। चतुर्वेदी जी ने प्रकृति के नैसर्गिक आनन्द का अनुभव किया और प्रकृति में व्याप्त रहस्य को अपने काव्य में चित्रित किया। अलौकिक प्रेम द्वारा मानवीय एकता को बनाये रखने का प्रयास किया।

भगवद् प्रेम या भक्ति भावना

माखनलाल चतुर्वेदी की भगवद् भक्ति के आलम्बन हैं "श्रीकृष्ण"। उनकी कविताओं में कृष्ण भावना और राष्ट्रीयता की भावना अलग-अलग न रहकर एक रूप हो गई है। माखनलाल जी अपने देश की धरती से श्यामल प्रभु की गाँठ बांधते हैं—

> श्यामल प्रभु से, भू की गांठ बांधती, जोरा-जोरी
>
> सूर्य किरण ये, यह मन-भावनि, यह सोने की डोरी,
>
> छनक बांधती, छनक छोड़ती, प्रभु के नव-पद-प्यार
>
> पल-पल बहे पटल पृथिवी के दिव्य-रूप सुकुमार।

उनके लिए देश की माटी है माखन और कृष्ण, धूल-धूसरित वेश है भारत माँ का मैला आंचल। वे कहते हैं—

> माखन ? भले माटी भले-हो धूलिधूसर वेश।
>
> खाऊँ, खिलूं, गाऊँ तुम्हारे विजयगीत स्वदेश।

"मुक्ति का द्वार" शीर्षक कविता में वे भारत के तीस करोड़ लोगों को बन्दी के रूप में देखते हैं तथा उसके द्वार के खुलने की प्रार्थना श्यामल प्रभु से करते हैं—

> अरे कंस के बन्दी-गृह की,
>
> उन्मादक किलकार।
>
> तीस करोड़ बंदियों का भी
>
> खुल जाने दे द्वार।

तिलक की मृत्यु पर उन्होंने कविता लिखी, जिसमें पहली बार वे इस संदर्भ का उल्लेख करते हैं—

> दुखियों के जीवन लौट पड़ो, मेरे घन-गर्जन लौट पड़ो।
>
> जसुदा के मोहन लौट पड़ो, सित काली-मर्दन लौट पड़ो।

राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए गोवर्धन पर्वत उठाने में वे अद्वितीय पराक्रम देखते हैं। सदियों से पददलित और अपमानित देश के लिए साहस के शैल को उठाने की जरूरत है। वे वनमाली से प्रार्थना करते हैं कि—

> ब्रज की रज खाने को जाओ, प्रेम प्रवाह बहाने को
>
> छगुनि शिखा पर साहस का यह भारी शैल उठाने को।

इस प्रकार कृष्ण के जीवन के अनेक प्रसंग स्वाधीनता संग्राम में सार्थक हो गए। श्री कृष्ण उनके आराध्य इसलिये हैं कि वे राष्ट्रीय स्वाधीनता में उनके प्रेरक बनते हैं। उपासना और संघर्ष एक बिन्दु पर मिल जाते हैं।

स्वदेश प्रेम या राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीय चेतना का अत्यन्त उदात्त स्वर माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में मिलता है। वे कवि के रूप में "भारतीय आत्मा" के नाम से विख्यात थे, उनका काव्य सच्चे अर्थो में भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति है। "भारतीय आत्मा" का समस्त जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित रहा। राष्ट्रीय चेतना के कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी का शीर्ष स्थान है।

भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय जागरण, त्याग-बलिदान एवं सांस्कृतिक गौरवाभिमान की दृष्टि से चार गीत विशेष महत्व रखते हैं। वे हैं-राष्ट्रगान (जन गन मन), वंदेमातरम्, सारे जहाँ से अच्छा तथा पुष्प की अभिलाषा। इन गीतों में चतुर्थ गीत माखनलाल चतुर्वेदी की वाणी से निःसृत हुआ। संसार के किसी अन्य कवि ने स्वदेशी की स्वतंत्रता के लिए आत्म-बलिदान की ऐसी कामना नहीं की है—

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।

चाह नहीं प्रेमी-माला में विंध प्यारी को ललचाऊं।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं।

चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं।

मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

"भारतीय आत्मा" के काव्य में सर्वत्र राष्ट्रीय चेतना का ज्वालामुखी धधक रहा है। यह ज्वालामुखी अंग्रेजों के पाषाणी शासन को खण्ड-खण्ड कर सात समुद्र पार फेंक देना चाहता है। वे एक वीर सिपाही के रूप में सदैव राष्ट्र मुक्ति के युद्ध में सन्नद्ध खड़े अपने सेनापति के आदेश की प्रतीक्षा करते हैं—

बोल अरे सेनापति मेरे मन की घुण्डी खोल।

जल-थल-नभ हिलडुल जाने दे तू किंचित मत डोल।

दे हथियार या कि मत दे तू पर तू कर हुंकार।

ज्ञातों को मत, अज्ञातों को तू इस बार पुकार।

वे सिर पर प्रलय लिए और नेत्रों में मस्ती भरे एक वीर सिपाही के रूप में सदैव राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में लक्ष्य-प्राप्ति हेतु अटल खड़े हैं—

सिर पर प्रलय नेत्र में मस्ती

मुट्ठी में मनचाही

लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है

मैं हूँ एक सिपाही।

वे राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के सेनानी से अपनी बलि देने की आज्ञा माँगते हुए कहते हैं—

खिलने के पहले टूटेंगी, तोड़, बता मत भेद।

वनमाली अनुशासन की सूची से अंतर छेद।

श्रम-सीकर, प्रहार से जीकर, बना लक्ष्य आराध्य।

मैं हूँ एक सिपाही, बलि है मेरा अंतिम साध्य।

सैनिक केवल लड़ना और मरना जानता है। ये ही उसकी अधीन हैं। इस कार्य में विलम्ब उसे सह्य नहीं

होता। यदि सेनानायक उस कार्य में किंचित् विलंब और प्रतिरोध उपस्थित करता है तो उसके प्राण तिलमिला उठते हैं। आखिर वह स्वतंत्रता-संग्राम का सैनिक जो है। जीवन से उसे मोह कैसा। मृत्यु से उसे भय कहाँ। वह तो देह धारण कर भी विदेह हो जाता है। वह तो इतना ही जानता है कि—"मरण के बीच कहाँ विश्राम।" अतः चतुर्वेदी जी कहते हैं—

धीरज रोग, प्रतीक्षा, चिंता, सपने बने तबाही,

ऐ दिलदार द्वार खुलने दे, मैं हूँ एक सिपाही।

युवकों को बलि का संदेश देते हुए वे कहते हैं—

ये न मग हैं, तब चरण की रेखियाँ हैं

बलि-दिशा की अमर देखा-देखियाँ हैं

विश्व पर पद से लिखे कृति-लेख हैं ये

धरा-तीर्थों की दिशा की मेख हैं ये।

प्राण-रेखा खींच ये, उठ बोल रानी

री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।

X X X

खून हो जाये न तेरा देख, पानी

मरण का त्योहार, जीवन की जवानी।

वस्तुतः मरण का त्योहार मनाने का जो दिव्य स्वर चतुर्वेदी जी के काव्य में निनादित हुआ है वह अन्यत्र नहीं। चतुर्वेदी जी मूलतः बलि के कवि थे, सच्चे अर्थ में वे बलि-पंथी थे—

द्वार बलि का खोल चढ़ भूडोल कर दें

एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दें

मसल कर अपने इरादों सी उठाकर

दो हथेली है कि पृथ्वी गोल कर दें,

रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी

जाँच कर तू सीस दे देकर जवानी।

स्वतंत्रता आन्दोलन को सक्रिय प्रेरणा देने की प्रवृत्ति उनके काव्य में ही नहीं मिलती बल्कि उनके जीवन में भी मिलती है। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया और अनेक बार जेल यात्रा की। जेल-यात्रा उनके लिए गौरव यात्रा थी—

"क्या ? देख न सकती जंजीरों का गहना।

हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना।"

जो कवि बलिदान की भावना को लेकर मृत्यु का जयगान कर रहा हो, जिसकी वाणी और जीवन में कोई अन्तर न हो, जो स्वयं राष्ट्रीय-पथ का सच्चा पथिक हो उस कवि के काव्य की ओजस्विता का क्या कहना। बलिपन्थी कारागार को कृष्णमन्दिर, हथकड़ी को माता, पृथ्वी को शैया और आकाश को आच्छादन मानकर अपने नाम के संकेत पर सुरपुर तक को ठुकराकर राष्ट्र के लिए स्वयं को अर्पित कर देने के लिए पूरी तरह तत्पर हो रहे थे और ये भाव इसके लिए उन्हें प्रेरणा दे रहे थे—

"कागों का सुन कर्तव्य राग, कोकिल-कलरव को भूल-भूल,

सुरपुर ठुकरा, आराध्य कहे तो चल रौरव के कूल-कूल,

भूखण्ड बिछा, आकाश ओढ़, नयनोदक में, मोदक प्रहार

ब्रह्माण्ड हथेली पर उछाल, अपने जीवन-धन को निहार।"

उनकी कविताओं में निष्कपट देश प्रेम अभिव्यक्त हुआ है—

बलिशाला ही हो मधुशाला

प्रियतम पथ हो देश निकाला

प्राणों का आसव हो ढाला

गिरे न उसमें दाग री

चतुर्वेदी जी ने मानव-जीवन की उस अनुभूति को अभिव्यक्ति दी है जिसके कारण सोया राष्ट्र जाग उठता है। "अमर राष्ट्र" कविता में कवि के ओजस्वी भाव व्यक्त हुए हैं—

मैं यह चला पत्थरों पर चढ़, मेरा दिलवर यहीं मिलेगा।

फूँक जला दें सोना-चाँदी तभी क्रान्ति का सुमन खिलेगा ?

चट्टाने चिंघाड़ें हँस-हँस सागर गरजे मस्ताना-सा,

प्रलय राग अपना भी उसमें, गुँथे चले ताना-बाना-सा।"

जो काल के विकराल रूप पर अपने चिह्न अंकित कर युग को सहज तथा प्रेरित करता है वह "युग कवि" कहलाता है। पं. माखनलाल चतुर्वेदी का कवि एक ऐसा ही युगकवि है, जिसने अपने युग की आत्मा को पहचानकर उसे वाणी के स्वर दिये हैं।

युग के सत्य को प्रकट करते हुए कवि कहता है—

मातृभूमि है उसकी, जिसको उठ जीना आता है,

दहन-भूमि है उसकी, जो क्षण-क्षण गिरता जाता है।

सच्चा राष्ट्रकवि सच्चे जननायक से प्रभावित हुए विना नहीं रह सकता। अपनी कविता के द्वारा राष्ट्रनायक के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने का गुरुतर दायित्व कवि ग्रहण करता है। चतुर्वेदी जी ने पूज्य बापू को अपनी युग-चेतना और राष्ट्रीय भावना के प्रतीक के रूप में देखा था। अतः उन्होंने बापू के प्रति कहा था—

युग तुम में तुम युग में कैसे झांक रहे हो बोलो।

उथल-पुथल तब हो कि समय में जब तुम जीवन घोलो।

तुम कहते हो बलि से पहले अपना हृदय टटोलो

युग कहता है क्रांति-प्राण। पहिले बंधन तो खोलो।

X X X

कंठ भले हों कोटि-कोटि तेरा स्वर उनमें गूँजा

हथकड़ियों को पहन राष्ट्र ने पढ़ी क्रांति की पूजा।

राष्ट्रीय धारा के सशक्त कवि माखनलाल चतुर्वेदी स्वाधीनता संग्राम काल के समस्त भारतीय काव्य में अन्यतम स्थान के अधिकारी हैं। "भारतीय आत्मा" ने वास्तव में अपना समस्त जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था। उनका हर शब्द, हर भाव और हर कार्य राष्ट्रीय चेतना की अनुगूँज होता था। वे आरंभ से लेकर अंत तक राष्ट्रीयता का ही अलख जगाते रहे। राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय भावना के एक चतुर चितेरे के रूप में उन्होंने भारत के परंपरागत आदर्श, त्याग, बलिदान और गांधीवाद के विचार को बड़े सुदंर ढंग से चित्रित किया। वास्तव में चतुर्वेदी जी की रचनायं राष्ट्रीय वेदना, शौर्य और उदात्त भारतीय संस्कृति की आंतरिक चेतना को अभिव्यक्त करने में बेजोड़ हैं।

39.5 चतुर्वेदी जी के काव्य का रचना-शिल्प

चतुर्वेदी जी उस युग के कवि थे जिस युग ने काव्य-निर्माण की नींव डाली। चतुर्वेदी जी द्विवेदी कालीन प्रमुख कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के साथ ही हिन्दी साहित्य में आये और उनके ही समान छायावाद की सीमा को

पार करके कई दशकों तक हिन्दी काव्य को समृद्ध करते रहे। अतः चतुर्वेदी जी की द्विवेदीकालीन रचनाएँ अपने शिल्प में सरल होते हुए भी बड़ी ही मार्मिक हैं। "जवानी" शीर्षक रचना में प्राकृतिक चित्रों के सहारे कवि ने युवावस्था का सुन्दर चित्र खींचा है—

वह कली के गर्भ से फल-रूप में, अरमान आया।

देख तो मीठा इरादा किस तरह, सिर तान आया।

X X X

फल दिये ? या सिर दिये ? तरू की कहानी

गूंथ कर युग में, बताती चल जवानी।

ऐसी रचनाओं में शिल्पगत लाक्षणिकता के स्थान पर सहज अभिव्यक्ति ही काव्य-सौंदर्य को आकर्षक बनाती है। इन रचनाओं में विद्वत्ता-प्रदर्शन अथवा चमत्कार निर्माण की प्रवृत्ति नहीं है।

चतुर्वेदी जी की भाषा सरल, सीधी और मुहावरेदार है, जो अभीष्ट विषय को ओजस्वी और सशक्त रूप प्रदान करती है। शैली में कहीं उद्‌बोधन है, कहीं भाषण कला की विशेषताएँ हैं तो कहीं-कहीं उपदेशात्मकता की शुष्कता भी है। कवि युग पुरुष को संबोधित करते हुए कहता है—

उठ-उठ तू, ओ तपी तमोमय जग उज्जवल कर।

गूँजे तेरी गिरा कोटि भवनों में घर-घर।

X X X

तू युग की हुंकार, अमर जीवन की वाणी,

तेरी सांसों में अमर हो उठे युग-कल्याणी।

कवि की संबोधन-शैली आत्मीयता की भावना जगाती है। कभी-कभी कवि की अभिलाषा, प्रकृति की अभिलाषा के रूप में प्रकट हुई है, जैसे "पुष्प की अभिलाषा", "वृक्ष की अभिलाषा" आदि में। चतुर्वेदी जी ने अपनी रचना में राष्ट्रीय-सामाजिक चेतना उद्‌बुद्ध करने के लिए आग, ज्वाला, चिनगारी, श्मशान, पेड़-पौधे, हिमालय की हुंकार, समुद्र-गर्जन, बादल, अंकुर, हरियाली, पौराणिक प्रसंग, ऐतिहासिक प्रसंग, अमृत-विष आदि नित्य जीवन परक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक बिम्बों और प्रतीकों की योजना की है।

माखनलाल जी साहित्य के जनता से कटे रह जाने, संग्रहालय की वस्तु बन जाने के खतरों को समझते हुए सरल भाषा के व्यवहार के प्रबल पक्षधर हैं।

चतुर्वेदी जी की कविता में ध्वनि संयोजना, पद संयोजना या शब्द योजना और वाक्य योजना के विविध स्तर इस रूप में मिलते हैं—

ध्वनि संयोजना

चतुर्वेदी जी की रचना में साधारण हिन्दी भाषा और लोकभाषा की ध्वनियों के प्रयोग मिलते हैं वे ध्वनियाँ हैं—गूंज उत्पन्न करने के लिए वर्णद्वित्व यथा-अन्न, मरणासन्न। अनुनासिकता-आँज, साँझ।

"ण" ध्वनि के प्रचुर प्रयोग—वेणु, रेणु, प्रणय, वाणी।

पद या शब्द योजना

चतुर्वेदी जी प्रायः संस्कृत से आगत तत्सम पद योजना का अधिक प्रयोग करते हैं—हिमगिरि, हिमशैल, हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, शिर, सुजन, सृजन, मुक्ति, ब्रह्माण्ड, पथ, बेला, अस्तित्व, रजतक्षण, संचार, व्रत, वैभव, उन्माद, प्रयास, उपहास, यौवन, वर, धूम्र-वलय, अणु, प्रणय, स्वेद, अणिमा, वाणी, प्रकाश जैसे तत्सम पद या शब्द उनकी कविता में बहुत प्रभुक्त हुए हैं। उनकी रचनाओं में तत्सम प्रकृति के पद-बंध भी मिलते हैं जैसे—मानव-हृदय, मुग्ध-संस्कार, राष्ट्र-वाणी, रजत-मुकुट, प्राण-रेखा, अखिल-जगतीतल, किरणबेला, मिलन-बेला, रजत-क्षण, अमर-रस, रवि-रथ, धूम्र-वलय, संकट-दल, अमित-अभिमान, पति-प्रकृति, स्वेद-कण, मौन-पुकार, गगन की रानी।

पद-संयोजना और भावानुरूप क्रियापद निर्माण में उन्होंने तत्सम-तद्भव देशी और विदेशी शब्दों का मेल भी किया है जैसे-भूडोल करदे, मोल करदे, इरादों सी उठाकर, पृथ्वी गोल करदे, छलक-छलक बन छन्द, कोल्हूकी चर्रक-चूँ, जीवन की तान. अकड़ का कुँआ, हड्डियों का स्वाद, दुःख भोगी प्यारे, दहलता नभ मंडल, हरिया उठना, उतर जी पर, नसीब कोठरी काली, कल्पना पर चढ़।

तुक और ताल के खिलाफ निरंतर चल रहे सशक्त आन्दोलन के चलते हुए भी चतुर्वेदी जी की कविता में तुक और ताल निरन्तर बने रहे हैं। उनकी कविताओं में लय और छन्द की झंकार हमेशा बनी रही है।

माखनलाल चतुर्वेदी जी की कविताओं की रचना धर्मिता को देखने पर एक बात और ध्यान आकर्षित करती है कि अपनी कविताओं में वे प्रश्नवाचक वाक्यों का बहुत अधिक प्रयोग करते हैं। अधिकांश कविताओं में प्रश्न ही कविता के आधार बन जाते हैं फिर प्रश्न और उत्तर के क्रम में ही कविता पूरी होती है। कविताओं की ऐसी प्रश्न शैली हिन्दी के किसी अन्य कवि में नहीं है—

1) सजृन ये कौन खड़े हैं ?

2) कौन पथ भूले ?

3) सूझों के रवि रथ पर किसने ?

4) कैसे दीखे हो मुरलीधर ?

5) चुपचाप मधुर विद्रोह बीज इस भांति बो रही क्यों हो ? कोकिल बोलो तो।

जैसे प्रश्न उनकी कविताओं में प्रायः ही मिलते हैं।

चतुर्वेदी जी का जीवन साधारण लोक-जीवन से अधिक निकट रहा है अतः स्वाभाविक ही था कि वे लोक-जीवन की विशेषताओं को भी आत्मसात करते। अपनी कविता में उन्होंने समय-समय पर लोक-धुनों को भी शामिल किया है। जैसे-स्वतंत्रता-संग्राम के संघर्षमय जीवन में जिस पत्नी को समुचित स्नेह-संरक्षण न दे सके उन्हीं के स्वर्गवास के बाद प्रथम श्राद्ध तिथि पर लिखी कविता में उनके हृदय में बसी लोक-धुन जैसे स्वतः निकल आई है—

बोलते थे तुम
अमर रस घोलते थे
तुम हठीले
पर हृदय पट नार
हो पाए कभी
मेरे न गीले।
ना, अजी! मैंने
सुने, तक भी नहीं,
प्यारे तुम्हारे बोल।
एक बिरिया, एक बिरिया
फिर कहो वे बोल।

माखनलाल जी की काव्य-साधना के मूल्यांकन में यह उल्लेखनीय है कि उस युग में हिन्दी कविता घुटरूअन चलने की स्थिति में थी। अतः चतुर्वेदी जी के काव्य का मूल्यांकन कभी भी उन्हें युग से काटकर नहीं किया जा सकता। संक्षेप में, चतुर्वेदी जी हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावनाओं के अमर गायक कवि हैं। उनकी काव्य-सम्पदा भाव और भाषा दोनों दृष्टि से विपुल है। उनकी शैली सर्वथा मौलिक और नूतन है। वे किसी लीक के पुजारी नहीं हैं, यही उनकी विशेषता है।

39.6 चतुर्वेदी जी के काव्य का मूल्यांकन

स्व. माखनलाल चतुर्वेदी एक साथ कवि, लेखक, पत्रकार, वक्ता, कहानीकार, नाटककार आदि रूपों में हमारे

सामने आते हैं। उनके साहित्य का मूल स्वर राष्ट्रीयता का है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना अनेक रूपों में व्यंजित हुई है। राष्ट्र के प्रति अनुराग, राष्ट्र-सेवकों और नेताओं के प्रति स्नेह और श्रद्धा, देश में जागरण का सन्देश एवं राष्ट्रहित के लिए बलि की भावना इनकी कविताओं में अभिव्यक्त हुई है।

माखनलाल चतुर्वेदी का हृदय सदैव स्वदेश अनुराग से ओत-प्रोत रहा है यही कारण है कि इनकी कविताओं में भारत का एक प्रतिनिधि कवि पराधीनता के शिकंजे से मुक्त होने के लिए छटपटाता सा जान पड़ता है। कवि की आत्मा "जवानी" शीर्षक कविता में भारत के युवकों का आह्वान करती है—

प्राण अन्तर में लिए, पागल जवानी।

कौन कहता है कि तू विधवा हुई, खो आज पानी ?

X X X

द्वार बलि का खोल चल, भूडोल कर दें,

एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दें,

मसलकर, अपने इरादों-सी, उठाकर,

दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें।

रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी ?

जाँच कर, तू सीस दे-देकर, जवानी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पथ पर मरण भी उनके लिए एक त्यौहार है। वे युवकों को बलि का संदेश देते हुए कहते हैं।

खून हो जोय न तेरा देख पानी

मरण का त्यौहार जीवन की जवानी।

माखनलाल चतुर्वेदी देश की राजनीतिक नब्ज को पहचानने वाले पहले हिन्दी साहित्यकार थे। ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय जनता को जिस अत्याचार और दमन का सामना करना पड़ रहा था उसका जीता-जागता चित्र चतुर्वेदी जी की अनेक कविताओं में अंकित हुआ है। कवि ने स्वयं अनेक बार जेल की कठोर यातनायें सही थी यही कारण है कि उनकी कविताओं में कोरी कल्पना ही नहीं है। अनुभूति की सच्चाई के कारण कवितायें और मार्मिक बन गई हैं।

"मरण-त्यौहार", "कैदी और कोकिला", "सिपाही", "सिपाहिनी", "जलियाँवाल बाग", "जवानी", शीर्षक कविताएँ आज भी पाठक के हृदय में राष्ट्रप्रेम की उमंग पैदा करती हैं।

उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता की महत्ता को अनुभव किया, पहचाना और भावाकुल अनुरोध किया कि इस भेद-भाव की संकीर्णता में मानव जीवन ही नहीं इस जीवन का जनक भी कलंकित होता है—

मन्दिर में हो चाँद चमकता, मसजिद में मुरली की तान,

मक्का हो चाहे वृन्दावन, होवें आपस में कुरबान।

X X X

हिन्दी माता की दोनों आँख, नाक को रखकर बीचों बीच,

अश्रु की उज्जवल धारा छोड़, प्रेम का पौधा देवें सीच।।

यही नहीं इस गुलाम और अनपढ़ देश में मनुष्य को अशिक्षा के अभाव में तिल-तिल पिसते या शोषित होते भी कवि ने देखा। उस शोषण की पीड़ा और कथा को सुना, गुना, गुनगुनाया तथा जन-जन को सुनाया भी—

अन्न नहीं है, फीस नहीं है, पुस्तक है न सहायक हाय,

जी में आता है पढ़ लिख लें, पर इसका है नहीं उपाय।

कोई हमें पढ़ाओ भाई, हुए हमारे व्याकुल प्राण,

हा! हा!! रोते फिरते हैं भारत के भावी विद्वान।

माखनलाल जी की कविताएँ समस्त भारतीय इतिहास की आवाज है। पूरे देश के हृदय को झकझोर देने की उनमें क्षमता है। जो कवि–"ऊंची काली दीवारों के घेरे में, डाकू चोरों बरमारों के डेरे में" घिरा रहकर भी हार नहीं मानता और निरंतर कहता है "खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुआँ"। वह कवि निश्चित ही धरती का कवि है, जो कहता है–

"धड़ से धड़ को जोड़ बना तू भारत एक अंखडित

तेरे यश का गान करेंगे प्रलय नाद के पंडित।"

"युग और तुम", "तिलक", "रोने दो लुट गया आज", "स्वर्गीय सप्रे जी की महायात्रा पर" तथा "राष्ट्रीय झण्डे की भेंट" जैसी कविताएँ कवि व्यक्तित्त्व की वीरता को उजागर करती हैं।

"जीवन का फूल" नामक कविता में वे कहते हैं–

"किन्तु कहे देता हूँ तुमसे सब जायेंगे भूल।

तेरे चरणों पर ही अर्पित होगा जीवन फूल।"

स्वातंत्र्य आन्दोलन का इससे अधिक और कहाँ आत्म त्याग एवं आत्म बलिदान का भाव देखने को मिलता है–जहाँ विजय मारने में नहीं अपितु मरने में होती है। वीरता शीश काटने में नहीं बल्कि कटाने में है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान ऐतिहासिक महत्व का रहा है। उन्होंने "प्रभा", "कर्मवीर" और "प्रताप" के माध्यम से देश और समाज को जागृत करने का अद्‌भुत कार्य किया। इनकी विद्रोहात्मक लेखनी से शासन घबरा गया और 1921, 1922, 1927 में इन्हें कारावास का दंड दिया। पत्रकारिता के क्षेत्र में ये जिन विभूतियों के आत्मीय संपर्क में आए उनमें प्रमुख थे–श्री माधवराव सप्रे, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महात्मा मुंशीराम, तथा पंडित विष्णु दत्त शुक्ल। "कर्मवीर" साप्ताहिक और 'प्रभा' में माखनलाल जी की जो कविताएँ प्रकाशित हुई उन्होंने उस समय के हिन्दी काव्य में क्रांतिकारी एवं राष्ट्रीय विचारधारा को एक प्रमुख काव्य प्रवृत्ति के रूप में स्थापित कर दिया।

माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्त्व एवं साहित्य की विशिष्टता इस बात में है कि उनकी वाणी और उनके कर्म में अद्‌भुत समन्वय था। उन्होंने न केवल राष्ट्रीयता की भावना से युक्त साहित्य लिखा बल्कि स्वयं राष्ट्रीय आन्दोलनों में हिस्सा लिया और कई बार जेल गए। जबलपुर जेल में जाने से पहले जब चतुर्वेदी जी विलासपुर जेल में थे तब उन्होंने 18 फरवरी को अपनी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना "एक फूल की चाह" लिखी जो सत्या ग्राहियों के लिए सुबह-शाम प्रार्थना जैसी थी। "हिम-किरीटिनी" "झरना" आदि अन्य रचनायें भी जबलपुर सेण्ट्रल जेल में लिखी गई थी। ये कवितायें अंग्रेजी शासन द्वारा सत्याग्राहियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती हैं तथा हिन्दी राष्ट्रीय कविताओं में अपना विशेष महत्व रखती हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चतुर्वेदी जी ने स्वतंत्रता संग्राम की विस्तृत भावभूमि का निर्माण किया और उसमें लड़ने एवं घूमने वालों की एक ऐसी टोली तैयार की जिसमें अदम्य साहस एवं गहन आत्मविश्वास था। वे देश की स्वतंत्रता संग्राम के अदम्य सेनानी थे, पत्रकारिता के क्षेत्र में राष्ट्र के जागरूक प्रहरी थे, कविता के क्षेत्र में राष्ट्र के बलिदान हो जाने का महान आदर्श प्रस्तुत करने वाले कवि थे। देश प्रेम के उत्कट भावों से उनकी सभी काव्य-कृतियों हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, माता, शुभचरण, समर्पण, वेणुलो गूँजे धरा आदि ओत-प्रोत हैं।

39.7 काव्य-वाचन (पाठ)

कैदी और कौकिला (हिमकिरीटिनी)

काली तू, रजनी भी काली,

शासन की करनी भी काली,

काली लहर कल्पना काली,

मेरी काल कोठरी काली,

टोपी काली कमली काली,
मेरी लौह-श्रृंखला काली
पहले की हुंकृति की व्याली,
तिस पर है गाली, ऐ आली।

    इस काले संकट-सागर पर
    मरने को, मदमाती।
    कोकिल बोलो तो।
    अपने चमकीले गीतों को
    क्योंकर हो तैराती।
    कोकिल बोलो तो।

तेरे "माँगे हुए" न बैना,
री, तू नहीं बन्दिनी मैना,
न तू स्वर्ण-पिंजड़े की पाली,
तुझे न दाख खिलाये आली।
तोता नहीं; नहीं तू तूती,
तू स्वतंत्र, बलि की गति कूती
तब तू रण का ही प्रसाद है,
तेरा स्वर बस शंखनाद है।

    दीवारों के उस पार।
    या कि इस पार दे रही गूँजें ?
    हृदय टटोलो तो।
    त्याग शुक्लता,
    तुझ काली को, आर्य-भारती पूजे,
    कोकिल बोलो तो।

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली।
तेरा नभ भर में संचार
मेरा दस फुट का संसार।
तेरे गीत कहावें वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह।
देख विषमता तेरी मेरी,
बजा रही तिस पर रण-भेरी।

    इस हुंकृति पर,
    अपनी कृति से और कहो क्या कर दूं ?

कोकिल बोलो तो।
मोहन के व्रत पर,
प्राणों का आसव किसमें भर दूं।
कोकिल बोलो तो।

फिर कुहू। .... अरे क्या बन्द न होगा गाना ?
इस अंधकार में मधुराई दफनाना ?
नभ सीख चुका है कमजोरों को खाना,
क्यों बना रही अपने को उसका दाना ?
फिर भी करूणा-गाहक बन्दी सोते हैं,
स्वप्नों में स्मृतियों की श्वासें धोते हैं।
इन लौह-सीखचों की कठोर पाशों में
क्या भर दोगी ? बोलो निद्रित लाशों में ?

क्या ? घुस जायेगा रूदन
तुम्हारा निःश्वासों के द्वारा,
कोकिल बोलो तो।
और सवेरे हो जायेगा
उलट-पुलट जग सारा,
कोकिल बोलो तो।

पुष्प की अभिलाषा (युग-चरण)

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना बनमाली।
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

सिपाही (हिमकिरीटिनी)

गिनो न मेरी श्वास,
छुए क्यों मुझे विपुल सम्मान ?
भूलो ऐ इतिहास,
खरीदे हुए विश्व-ईमान।।
अरि-मुंडों का दान,
रक्त-तर्पण भर का अभिमान,

लड़ने तक महमान,
एक पूंजी है तीर-कमान।
मुझे भूलने में सुख पाती,
जग की काली स्याही,
दासो दूर, कठिन सौदा है
मैं हूँ एक सिपाही।
क्या वीणा की स्वर-लहरी का
सुनूँ मधुरतर नाद ?
छिः। मेरी प्रत्यंचा भूले
अपना यह उन्माद।
झंकारों का कभी सुना है
भीषण वाद-विवाद ?
क्या तुमको है कुरु-क्षेत्र
हलदी-घाटी की याद।
सिर पर प्रलय, नेत्र में मस्ती,
मुट्ठी में मन-चाही,
लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है,
मैं हूँ एक सिपाही।
खींचों राम-राज्य लाने को,
भू-मंडल पर त्रेता।
बनने दो आकाश छेदकर
उसको राष्ट्र-विजेता,
जाने दो, मेरी किस
बूते कठिन परीक्षा लेता,
कोटि-कोटि "कंठों" जय-जय है
आप कौन हैं, नेता ?
सेना छिन्न, प्रयत्न खिन्न कर,
लाये न्योत तबाही,
कैसे पूजूँ गुमराही को
मैं हूँ एक सिपाही।

39.8. संदर्भ सहित व्याख्या

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली।

तेरा नभ भर में संचार,

मेरा दस फुट का संसार।

तेरे गीत कहावें वाह,

रोना भी है मुझे गुनाह।

देख विषमता तेरी मेरी,

बजा रही तिस पर रण-भेरी।

संदर्भः प्रस्तुत पंक्तियाँ स्व. माखनलाल चतुर्वेदी कृत हिमकिरीटिनी पुस्तक की "कैदी और कोकिला" शीर्षक कविता से ली गई हैं। यह कविता कवि ने जबलपुर सेन्ट्रल जेल में सन् 1930 में लिखी थी। इस कविता में कवि ने ब्रिटिश शासन के कारागार की भयावह स्थिति का चित्रण किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कोयल से प्रश्न करते हुए अपने कैदी जीवन की व्यथा को व्यक्त किया है। कोयल के आजाद जीवन से अपने पराधीन जीवन की तुलना करते हुए एक कैदी की मनोदशा चित्रित की है—

अर्थः कवि कहता है कि कोयल के लिए पूरा हरा-भरा वन-प्रदेश खुला पड़ा है जबकि कवि के भाग्य में जेल की काल-कोठरी ही है। जहाँ कोयल खुले आकाश में आजादी से विचरण कर सकती है वहीं कवि कैदी के रूप में दस फुट की काल-कोठरी की सीमा में ही जीवन-बिताने को विवश है। कोयल को उसकी कूक पर सबकी प्रशंसा मिलती है जबकि कैदी के लिए गाना तो दूर रोना भी अपराध है। कवि कहता है कि कोयल के जीवन में और उसके कैदी जीवन में बहुत बड़ा अंतर है यही कारण है कि कवि को कोयल की कूक रण-भेरी के समान प्रतीत होती है, मानों वह आह्वान कर रही है गुलामी के विरुद्ध आजादी के लिए संघर्ष करने का।

विशेषः

1) इन पंक्तियों में कवि ने कोकिल के माध्यम से पराधीन जीवन की विवशता और स्वतंत्र जीवन के आनन्द को बताने का प्रयास किया है।

2) गुलामी का जीवन मनुष्य की समस्त चेतना को दुर्बल कर देता है।

3) ये पंक्तियाँ तत्कालीन ब्रिटिश शासन के भयावह अत्याचार एवं जेल के यातनामय जीवन को उद्घाटित करती हैं।

4) कवि ऐसी विषम परिस्थिति में भी निराश नहीं है वह कोकिल से प्रेरणा लेकर जन-जन में स्वतंत्रता का मंत्र फूँकता है, जन-जन को जागृत करता है।

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,

चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,

चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ देना बनमाली!

उस पथ में देना तुम फेंक।

मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक।

प्रस्तुत पंक्तियाँ स्वर्गीय माखनलाल चतुर्वेदी कृत "युग चरण" पुस्तक की "पुष्प की अभिलाषा" शीर्षक कविता की हैं। यह कविता कवि ने 18 फरवरी 1922 को विलासपुर जेल में लिखी थी जो उस जमाने में हर देश-भक्ति के लिए प्रार्थना गीत थी जो सुबह-शाम जेल में देश-भक्तों द्वारा गायी जाती थी।

इस कविता के द्वारा कवि के हृदय में निहित त्याग एवं बलिदान की भावना को अभिव्यक्ति मिली है। पुष्प की चाह के माध्यम से कवि ने अपने मन की भावना ही व्यक्त की है—

"पुष्प की अभिलाषा" यह नहीं है कि वह देवकन्या का आभूषण बने या प्रेमी की माला में गुँथकर प्रिया को आकर्षित करे। उसकी इच्छा यह भी नहीं है कि वह सम्राटों के शव के लिए काम आये अथवा देवताओं के मस्तक पर सुशोभित होकर अपने को भाग्यशाली समझे। वह तो वनमाली से यह प्रार्थना करता है कि वह ऐसे रास्ते पर उसे फेंक दे जिस रास्ते से होकर मातृभूमि पर अपना मस्तक अर्पित करने के लिए देश-भक्त वीर जाते हैं।

विशेषः

1) कवि को लगता है कि क्रांति का जब विगुल बजता है तो केवल चेतन मनुष्य ही उससे प्रभावित नहीं होता बल्कि देश की धरती का कण-कण उससे प्रभावित होता है। देश की वाटिका के एक पुष्प की अभिलाषा भी देश के लिए स्वयं को अर्पित कर देने की है।

2) पुष्प के सामने उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित होने के अनेक अवसर हैं लेकिन उन प्रलोभनों को ठुकराकर वह ऐसे रास्ते पर पद दलित होना चाहता है जहाँ से देश-भक्त वीर देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने के लिए जा रहे हैं।

3) इस कविता द्वारा कवि ने त्याग एवं बलिदान की भावना को जगाने तथा मातृ-भूमि के लिए सर्वस्व अर्पित करने की उत्कट अभिलाषा जागृत करने का सार्थक प्रयास किया है।

39.9 सारांश

- स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी कविता पर नवजागरण का प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा। विविध सुधारवादी आन्दोलनों से देश की जनता में जागृति आयी। अफ्रीका में गांधी जी का अहिंसात्मक प्रतिरोध सफल हुआ जिसने देश की जनता को मानसिक बल प्रदान किया। उसी समय हिन्दी कविता-क्षेत्र में माखनलाल चतुर्वेदी का आगमन हुआ।

- चतुर्वेदी जी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को होशंगाबाद के बाबई ग्राम में हुआ था। बचपन से ही चतुर्वेदी जी को देश की मिट्टी से प्यार था और वे क्रांतिकारियों की मदद भी किया करते थे। 1906 में इन्होंने क्रांतिकारी नेता देवसकर से दल की दीक्षा ली। सैयद अलीमीर, स्वामी रामतीर्थ, पं. माधवराज सप्रे और माणकचन्द जैन का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा। अपना जीवन और साहित्य इन्होंने राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। 1906 से 1920 तक ये क्रांतिकारी दल के लिए कार्य करते रहे। 1920 में ये गांधी जी के अनुयायी बने। इन्हें इनकी कृतियों के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनकी मृत्यु सन् 1968 को खण्डवा में इनके निवास स्थान पर हुई।

- माखनलाल चतुर्वेदी एक निर्भीक एवं समर्पित पत्रकार थे। उन्होंने "प्रभा" और "कर्मवीर" का संपादन किया। गणेश शंकर विद्यार्थी के जेल जाने पर इन्होंने "प्रताप" का सम्पादन भी किया। "कर्मवीर" माखनलाल जी की भावनाओं एवं विचारधाराओं को स्पष्ट करने वाले प्रमुख पत्र के रूप में सामने आता है। इस पत्र का एक-एक शब्द राष्ट्रीय जागरण का जीता-जागता इतिहास है। इनकी विद्रोहात्मक लेखनी से घबराकर ब्रिटिश शासन ने सन् 1921, 1922 एवं 1927 में गिरफ्तार कर उन्हें कारागार में भेज दिया। इन्होंने "प्रभा", "कर्मवीर" और "प्रताप" के माध्यम से देश की जनता को क्रांति का संदेश दिया और लेखकों, कवियों तथा पत्रकारों की ऐसी पीढ़ी तैयार की जिनकी रचनाएँ निरन्तर क्रांति का संदेश देती रहीं।

- चतुर्वेदी जी की कविताएँ मुख्य रूप से तीन भावधारा में विभक्त की जा सकती हैं– (1) अलौकिक प्रेम या रहस्य भावना (2) भगवद् प्रेम या भक्ति-भावना (3) स्वदेश प्रेम या राष्ट्रीय भावना। इनकी कविता का केन्द्रीय भाव राष्ट्रीयता का ही है। राष्ट्र के प्रति अनुराग, राष्ट्र-सेवकों और नेताओं के प्रति स्नेह और श्रद्धा, देश में जागरण का सन्देश एवं राष्ट्र हित के लिए बलि की भावना इनकी राष्ट्रीय कविताओं का मूल स्वर है। चतुर्वेदी जी की रचनाएँ शिल्प की दृष्टि से बड़ी सरल होते हुए भी मार्मिक हैं।

- शिल्पगत लाक्षणिकता के स्थान पर सहज अभिव्यक्ति ही इनके काव्य-सौन्दर्य का मूल आधार है। इनकी भाषा सरल, सीधी और मुहावरेदार है। सरल भाषा व्यवहार के ये प्रबल पक्षधर हैं। इन्होंने तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुत किया है साथ ही तत्सम-तद्भव, देशी और विदेशी शब्दों का मेल भी किया है।

इनकी कविता में तुक और ताल, लय और छंद की झंकार हमेशा बनी रहती है। इनकी रचनाओं में प्रश्नवाचक वाक्यों का प्रयोग अधिक हुआ है। चतुर्वेदी जी की शैली सर्वथा मौलिक और नूतन है।

- इन्होंने न केवल राष्ट्रीयता की भावना से युक्त साहित्य लिखा बल्कि स्वयं राष्ट्रीय आन्दोलनों में हिस्सा लिया, कई बार जेल गए। "मरण त्यौहार", "कैदी और कोकिला", "सिपाही", "सिपाहिनी", "जलियाँवाला बाग", "जवानी", "युग और तुम", "तिलक", "रोने दो लुट गया आज", स्व. सप्रे जी की महायात्रा पर", "राष्ट्रीय झण्डे की भेंट" "पुष्प की अभिलाषा"—शीर्षक कविताएँ इनके हृदय की देश भक्ति भावना को उजागर करती हैं। वे देश के स्वतंत्रता संग्राम के अनन्य सेनानी, पत्रकारिता के क्षेत्र में राष्ट्र के जागरूक प्रहरी, कविता के क्षेत्र में राष्ट्र के लिए बलिदान हो जाने का महान आदर्श प्रस्तुत करने वाले कवि थे।

अभ्यासः

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिएः—

(i) इन्होंने क्रांतिकारी नेता .... से दल की दीक्षा ली।

(ii) सन् .... से .... ई. तक श्री चतुर्वेदी क्रांतिकारी दल के लिए कार्य करते रहे।

(iii) इनकी विद्रोहात्मक लेखनी से घबराकर ब्रिटिश शासन इन्हें सन् .... और .... में राजद्रोह के अभियोग में कारागार भेजता रहा।

(iv) हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग में .... पर उन्हें .... पुरस्कार दिया।

(v) "झण्डे की भेंट" शीर्षक कविता .... के .... में प्रकाशित हुई थी।

(vi) .... चतुर्वेदी जी की भावनाओं एवं विचारधाराओं को स्पष्ट करने वाले प्रमुख पत्र के रूप में सामने आता हैं

(viii) .... के जेल जाने पर इन्होंने "प्रताप" का संपादन कानपुर में रहकर किया।

सही उत्तर दीजिएः—

(i) माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ शिल्प की दृष्टि से सरल/दुरूह हैं।

(ii) माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य भाषा सरल और मुहावरेदार है/क्लिष्ट है।

(iii) माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में तत्सम पद योजना/तद्भव पद योजना का प्रयोग अधिक हुआ है।

(iv) इनकी कविता में तुक और ताल है/नहीं है।

(v) इनकी कविताओं में लोकधुन भी शामिल है/नहीं है।

39.10 उपयोगी पुस्तकें

1) माखनलाल चतुर्वेदीः व्यक्तित्त्व और कृतित्व - संपादक प्रेमनारायण टंडन

2) हिन्दी अनुशीलन (माखनलाल चतुर्वेदी विशेषांक) - भारतीय हिन्दी इलाहाबाद

3) माखनलाल चतुर्वेदीः यात्रा पुरुष-संपादक, श्री कान्त जोशी

39.11 बोध प्रश्नों एवं अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

(i) राष्ट्रीय चेतना की कविता जाति, समाज और प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना मिटाती है और जन जीवन में कर्तव्य की भावना जगाती है।

(ii) राजा राम मोहन राय के ब्रह्म समाज, स्वामीदयानन्द सरस्वती के आर्य समाज, रामकृष्ण परम हंस के रामकृष्ण मिशन, महाराष्ट्र के महादेव गोबिन्द रानाडे, थियोसोफिकल सोसाइटी, इण्डियन एसोसिएशन और नेशनल कांग्रेस द्वारा सुधारवादी आन्दोलन चलाए गए जिसने स्वतंत्रतापूर्व की राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित किया।

बोध प्रश्न - 2

(i) माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 को होशंगाबाद के "बाबई" ग्राम में हुआ था।

(ii) उन्हें संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि भाषाओं का ज्ञान था।

(iii) सैयद अलीमीर, स्वामी रामतीर्थ, पं. माधवराज सप्रे तथा माणक चन्द जैन का उनके जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

बोध प्रश्न-3

(i) माखनलाल चतुर्वेदी ने "प्रभा", "कर्मवीर" और "प्रताप" का संपादन किया।

(ii) पत्रकारिता के क्षेत्र में वे श्री माधवराज सप्रे, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महात्मा मुंशी राम तथा पंडित विष्णु दत्त शुक्ल के निकट संपर्क में आये।

(iii) "कर्मवीर" पत्र उन दिनों राष्ट्रीय जागरण का अग्रदूत था।

बोध प्रश्न-4

(i) माखनलाल चतुर्वेदी "भारतीय आत्मा" के नाम से विख्यात हुए।

(ii) चतुर्वेदी जी की कविताओं के भाव पक्ष को तीन रूपों में बाँटा जा सकता है—(1) अलौकिक प्रेम या रहस्य भावना (2) भगवद् प्रेम या भक्ति भावना (3) स्वदेश प्रेम या राष्ट्रीय भावना।

(iii) चतुर्वेदी जी की कविताओं में लोक जीवन का प्रभाव लोक धुनों के रूप में पड़ा।

बोध प्रश्न-5

(i) "मरण त्यौहार", "कैदी और कोकिला", "सिपाही", "सिपाहिनी", "जलियाँवाला बाग", "जवानी", "युग और तुम", "तिलक", "रोने दो लुट गया आज" स्व. सप्रे जी की महायात्रा पर तथा "राष्ट्रीय झण्डे की भेंट" आदि कविताएँ इनकी राष्ट्रीय भावना और कवि व्यक्तित्व की वीरता को उजागर करती हैं।

(ii) 18 फरवरी 1922 को इन्होंने विलासपुर जेल में "पुष्प की अभिलाषा" शीर्षक कविता लिखी थी।

बोध प्रश्न-6

(i) कोयल की वाणी को कवि "रण भेरी" इसलिए कहता है क्योंकि कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो वह गुलामी के विरूद्ध संघर्ष करने का आह्वान कर रही है।

(ii) "पुष्प की अभिलाषा" के माध्यम से स्वयं कवि की बलिदान भावना व्यक्त हुई है।

पंक्ति का अर्थः—

(i) पराधीन व्यक्ति की यह पीड़ा है कि वह अपनी इच्छा से रो भी नहीं सकता।

(ii) कैदी का संसार जेल की चार-दीवारी के भीतर की अंधेरी कोठरी ही होता है।

अभ्यासों के उत्तरः—

(i) इन्होंने क्रांतिकारी नेता **देवसकर जी** से दल की दीक्षा ली।

(ii) सन् 1906 से 1920 ई. तक श्री चतुर्वेदी निरंतर क्रांतिकारी दल के लिए कार्य करते रहे।

(iii) इनकी विद्रोहात्मक लेखनी से घबराकर ब्रिटिश शासन इन्हें सन् **1921, 1922** और **1927** में राजद्रोह के अभियोग में कारागार भेजता रहा।

(iv) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने **हिमकिरीटिनी** पर उन्हें **"देव"** पुरस्कार दिया।

(v) "झंडे की भेंट" शीर्षक कविता **"प्रभा"** के **"झंडा अंक"** में प्रकाशित हुई थी।

(vi) **"कर्मवीर"** चतुर्वेदी जी की भावनाओं एवं विचारधाराओं को स्पष्ट करने वाले प्रमुख पत्र के रूप में सामने आता है।

(vii) **गणेशशंकर विद्यार्थी** के जेल जाने पर इन्होंने "प्रताप" का संपादन कानपुर में रहकर किया।

सही उत्तर दीजिए:–

(i) सरल हैं।

(ii) सरल और मुहावरेदार है।

(iii) तत्सम पद योजना का प्रयोग अधिक हुआ है।

(iv) तुक और ताल हैं।

(v) शामिल है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखियेः–

1) माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय अपने शब्दों में लिखिये।

2) माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में व्यक्त राष्ट्रीय भावना को अपने शब्दों में लिखिये।

3) पत्रकारिता के क्षेत्र में चतुर्वेदी जी के योगदान को अपने शब्दों में लिखिये।

4) "कैदी और कोकिला" कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

5) "पुष्प की अभिलाषा" में व्यक्त बलिदान भावना का मर्म उद्घाटित कीजिए।